महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
चौकमाफी पीपीगंज गोरखपुर उत्तर प्रदेश २७३१६५
Mahayogi Gorakhnath Krishi Vigyan Kendra
Chaukmafi (Peppeganj), Jangal Kaudiya Gorakhpur, U.P-273165
Website : http://www.mgkvk.in Email: gorakhpurkvk2@gmail.com

कोविड-19 वायरस के कारण लाकडाउन के दौरान किसान भाइयों के लिए अप्रैल-मई माह के लिए प्रमुख खेती-बाड़ी कार्य हेतु समसामयिकी सलाह

- गेहू, चना, मटर, जौ, मसूर की फसल पककर तैयार है उसकी समय से कटाई-मड़ाई का कार्य कर लें। फसलों की कटाई करते समय मजदूर मास्क लगायें तथा 5-6 फीट की दूरी बनाये रखें।
- खलिहान में रखे फसल व् अनाज के लिए ध्यान दें कि ऊपर बिजली का तार न हो और बीड़ी, सिगरेट, हुक्का तम्बाकू आदि का प्रयोग खलिहान में कदापि न करें।
- मड़ाई करते समय ध्यान रखें की फसल अच्छी तरह से सूखी हो, थ्रेशर में सावधानी से लगाएं, थ्रेशर के मुँह तक पहुँचाने के लिए चौकी या तख़्त का प्रयोग करें जिससे दुर्घटना से बचा जा सके ।
- अनाज भंडारण करने से पूर्व अनाज को कड़ी धूप में इतना सुखाएं कि उसमें नमी की मात्रा 8-10 प्रतिशत से अधिक न हो।
- अनाज भण्डारण से पूर्व कुठले या भण्डारगृह को कीटनाशी से विसंक्रमित अवश्य करें। जहाँ तक संभव हो सके भंडारण में एक ही प्रकार के अनाज का भण्डारण करें। अनाज को 100:1 के अनुपात में नीम बीज पावडर के साथ मिलाकर रखें। गेहूं में 200 ग्राम लहसुन की गाँठ प्रति कुन्तल की दर से मिलाकर रखें। अनाज भंडारण में नीम की सूखी पत्तियों या सूखी मिर्च का भी प्रयोग किया जा सकता है। यदि अनाज को बोरियों में भरकर रखना हो टो नीचे पर्याप्त मात्रा में भूसे व् नीम की सूखी पत्ती की तह बिछा दें तथा बोरे को दीवार से 50 सेमी. दूर रखें। नए बोरियों को नीम के 5 प्रतिशत घोल में उपचारित कर तथा सुखा कर ही अनाजों के भंडारण हेतु प्रयोग करें।

- सूरजमुखी के खेतो से कमजोर या रोगी पौधों को निकालकर पौधों के बीच की दूरी 20 सेमी. कर दें तथा बुआई के 15-20 दिन बाद पहली सिचाई तथा प्रथम सिचाई के बाद 10-15 दिनों के अंतराल पर सिचाई करते रहें।
- सूरजमुखी की बुआई के 25-30 दिन बाद 80-85 किग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से टाप ड्रेसिंग करें। कीटों से बचाव हेतु नीम आधारित उत्पाद का प्रयोग 2 मिली./लीटर पानी की अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 1 मिली. प्रति 2 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- उर्द/मूंग की बुआई के 25-30 दिन बाद पहली सिचाई करें, तथा कीटों से रोकथाम हेतु नीम आधारित उत्पाद का प्रयोग 2 मिली./लीटर पानी की अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 1 मिली. प्रति 2 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। पीला मोज़ेक रोग से रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 1 मिली. प्रति 2 लीटर पानी अथवा स्पाईनोसैड 45% एस.सी. 1 मिली/प्रति 5-6 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

- शरदकालीन/बसंतकालीन की सिचाई 18-20 दिनों के अन्तराल पर सिचाई करते रहें तथा ओट आने पर गुड़ाई का कार्य अवश्य करें।
- बहुत से किसान गन्ने की बुआई गेहूं की कटाई के बाद करते हैं, अत: उन खेतों में बोने से 5-7 दिन पहले सिचाई क्र दें, तथा अच्छी तरह खेत तैयार करने के बाद ही गन्ने की बुआई करें। बुआई 10 सेमी. गहराई पर तथा 75 सेमी. दूर बनी कूड़ों में करें। बुआई से पूर्व गन्ने के टुकड़ो को 18-20 घंटे पानी में डुबो दें एवं साथ ही बीजशोधन का कार्य कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से घोला बनाकर अवश्य करें। गन्ने की दो कतारों के मध्य मूँग की एक कतार बोई जा सकती है। गन्ने फसल को दीमक, अंकुर एवं प्ररोह बेधक तथा अन्य कीटों से बचाव हेतु फिप्रोनिल 0.3 जी. की 20 किग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से कूड़ों में अथवा खेत की तयारी के समय मिलाएं।
- गन्ने की पड़ी फसल से अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु 160-165 किग्रा. यूरिया पहली फसल कटने के बाद तथा 160 -165 किग्रा. यूरिया प्रथम सिचाई व् दूसरी सिचाई के बाद प्रयोग करें।
- चारे के लिए मक्का, लोबिया व् बहु कटाई वाली चरी की बुआई करें, अथवा बोई गयी फसल की सिचाई आवश्यकतानुसार (12-15 दिनों के अन्तराल पर) करते रहें, तथा यूरिया की टॉप ड्रेसिंग मक्के में 85 किग्राम./हे. व् बहु कटाई चरी में 65 किग्राम./हे. की दर से करें।
- हरी खाद के लिए सनई, ढैंचा की बुआई के लिए खेत की तयारी करें, 45-50 किग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- मिटटी में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परीक्षण करवा लें, मृदा जाँच हेतु नमूना फसल कटाई के बाद लें, खेत के मेड से 2 मीटर अंदर 15 सेमी. गहराई से अंग्रेजी के वी (V) आकार का गड्ढा बनाकर नमूना लें, 5-7 स्थानों से नमूना एकत्रकर आपस में मिला लें, चार बराबर भाग में बाटें, आमने-सामने की मिट्टी हटा दें शेष मिट्टी को पुन: मिला लें फिर यही प्रक्रिया करें, आमने-सामने की मिट्टी मिलाये शेष दो भाग को हटा दें, यह कार्य तब तक करें जब 400-500 ग्राम मिट्टी शेष बचे, उसके बाद एक थैले में भरकर उसमें किसान का नाम, गाटा संख्या, बोई गयी फसल का नाम, तथा बोई जाने वाली फसल का नाम लिखकर प्रयोगशाला में भेजें।
- खरीफ फसलों की तैयारी हेतु खेतों की ग्रीष्मकालीन जुताई का कार्य करें।
- जायद में बोई गयी सब्जियों लौकी, कुम्हाडा, खीर, करेला, ककड़ी, भिन्डी, मिर्च, बैगन, टमाटर आदि की सिचाई, गुड़ाई का कार्य समयानुसार करते रहें, तथा कीटों एवं रोगों से रोकथाम हेतु सुरक्षित दवाओं का ही प्रयोग करें। हल्दीअदरक की बुआई का कार्य करें।
- मई माह के अंतिम सप्ताह में देर से पकने वाली धान की नर्सरी डाली जा सकती है। धान की महीन किस्मों की 30 किग्रा., माध्यम आकार किस्मों के 35 किग्रा. तथा मोटे आकार किस्मों के 40 किग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर हेतु पर्याप्त होता है।

- धान की पौध तैयार करने हेतु प्रति 10 बर्ग मीटर क्यारी में 225 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 500 ग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें। रोगों से रोकथाम के लिए धान के बीजों का शोधन कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति किग्रा. बीज दर से करें।
- आम, अमरुद, लीची, पपीता, नीबू, बेर, बेल आदि बगीचों की सिचाई करते रहें। आम व् अन्य फसलों से अच्छी फलत हेतु कीटों से बचाव के लिए उपयुक्त कीटनाशियों का प्रयोग करें।
- गुलाब, गेंदा पुष्प में आवश्यकतानुसार सिचाई, निराई-गुड़ाई का कार्य करते रहें। मेंथा, अलोवेरा, सतावर व् अन्य सगंधीय फसलों में भी सिचाई, निराई-गुड़ाई तथा उर्वरकों की टॉप ड्रेसिंग का कार्य करते रहें।
- पशुओं को गर्मी तथा लू से बचाएं, पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा दें, स्वच्छ पानी की व्यवस्था करें तथा सुबह-शाम पशुओं को नहलाएं। गाय, भैस, भेड़ व् बकरियों में अंत: परजीवियों का उपचार कराएँ एवं चिकित्सीय सलाह लेकर पशुओं को गला घोटू तथा लंगड़िया बुखार का टीका लगवाएं। बांझपन की चिकित्सा तथा गर्भ परीक्षण करवाएं। दूध निकालने से पहले हाथ को साबुन से धोएं व् ढूढ़ निकालते समय मुँह पर मास्क अवश्य लगायें तथा थन को अच्छी तरह साफकर दूध निकालने का कार्य करें।
- पशुशाला में कार्य करेने वाले सभी व्यक्ति खुद की सफाई करें तथा पशुशाला व् पशुओं की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए 50-60 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन प्रति पशु अवश्य दें।
- मुर्गीखाने में ठंढक बनाये रखने हेतु एस्बेस्टस/टिन के छतों पर पेंट लगायें। मुर्गीखाने में लगे पर्दों पर पानी के छीटें प्रयोग करते रहें। मुर्गियों के लिए स्वच्छ जल उपलब्ध कराते रहें, तथा चारे में प्रोटीन की मात्रा 18 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत कर दें। मुर्गियों में रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण कराएँ।